International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 387-389

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(3): 387-389
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 03-07-2020
Accepted: 17-08-2020

डॉ. चन्द्रमौलि त्रिपाठी
प्रवक्ता, केंद्रीय विद्यालय ओल्ड कैंट, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश ।

Corresponding Author:
डॉ. चन्द्रमौलि त्रिपाठी
प्रवक्ता, केंद्रीय विद्यालय ओल्ड कैंट, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश ।

पाणिनीय प्रत्याहारों का वैशिष्ट्य

डॉ. चन्द्रमौलि त्रिपाठी

प्रस्तावना

महामुनि पाणिनि एवं उनके उत्तरवर्ती जितने भी वैयाकरण हुए, उनके द्वारा विरचित व्याकरणों में प्रत्याहार का विशिष्ट स्थान है | उन वैयाकरणों ने जिन सूत्रों की रचना की उनका आधार वर्ण समाम्नाय ही है | कुछ वैयाकरण ऐसे भी हैं जिन्होंने प्रत्याहारों को तो स्वीकार नहीं किया है परन्तु उसके स्थान पर वर्णमातृका को उपस्थापित कर, सूत्रों की रचना की है |वर्णमातृका में भी वही वर्ण स्वीकृत किए गए जो प्रत्याहारों में थे | वस्तुत: किसी भी व्याकरण में प्रत्याहार लाघवमूलक शास्त्र की प्रवृत्ति के हेतु होते हैं | शास्त्र प्रवृत्ति में सहजता और लाघव किस प्रकार हो यही चिंतन वर्णसमाम्नाय पर आधृत प्रत्याहारों के सर्जन का कारण है | प्रत्याहारों की संख्या और उनके प्रयोग में आचार्यों में बहुश: मत-वैभिन्य पाया जाता है परन्तु पाणिनि के प्रत्याहार इनमें अपनी विशिष्टता रखते हैं | जिस प्रकार सभी भाषाओं पर संस्कृत भाषा का प्रभाव है, उसी तरह पाणिनि के उत्तरवर्ती वैयाकरणों पर पाणिनि का प्रभाव परिलक्षित होता है |

कुछ वैयाकरण आचार्य पाणिनि के प्रत्याहार सूत्रों का उल्लेख अपनी सुविधानुसार करते हैं | जैसे शाकटायन व्याकरण में पाणिनि स्वीकृति चौदह सूत्रों के स्थान पर तेरह सूत्र ही उल्लिखित किए हैं परन्तु लण और हयवरट् के स्थान पर हयवरल- यह एक सूत्र ही बना दिया |यहाँ विचारणीय प्रश्न यह है कि टकार-अनुबंधघटक तथा अट् प्रत्याहार के द्वारा होनेवाली प्रयोगसिद्धि कैसे संपन्न होगी | अक् प्रत्याहार में शाकटायन के अनुसार मात्र अ इ उ वर्णों का ही सन्निवेश होता है, अन्य का नहीं | अन्य वर्णों के सन्निवेशाभाव में सय्यंन्ता इत्यादि में स्व सवर्ण बोध कैसे होगा, इसे सिद्ध में अत्यंत क्लिष्टता का अनुभव होता है | इसलिए जो वैशिष्ट्य पाणिनि के व्याकरण में है, वह अन्यत्र दुर्लभ है |

पाणिनि ने "मोऽनुस्वारः[1]**" सूत्र स्वीकार किया, जबकि शाकटायन ने "**शल्यनुस्वरः[2]**" स्वीकार किया | यहाँ भी पाणिनि की रीति से ही लाघव प्रतीत होता है क्योंकि शाकटायन के व्याकरण में शत्व् प्रत्याहार सूत्र से श् ष् स् अं अ: क् प् र् ह् इन वर्णों का बोध होता है |**

शाकटायन के सूत्र से इनके परे अनुस्वार का विधान किया जाता है जबकि पाणिनि ने झल् पर अनुस्वार का विधान किया है | झल् और शल् प्रत्याहारों के मध्य में यद्यपि शल् प्रत्याहार के अंतर्गत न्यून वर्ण आने से लघुता दिखती है परन्तु उपध्मानीय का पाठ न आना एक अधूरापन दिखाता है | इस प्रकार यह देखने में आता है कि पाणिनि व्यवहृत तैतीस प्रत्याहारों को शाकटायन ने स्वीकृत किया, कुछ को अंशत: तो कुछ को अस्वीकृत भी कर दिया | पाणिनि ने लीढम्, गूढम् की प्रयोगसिद्धि ''द्रलोपेपूर्वस्यदीर्घोऽण:[3]'' सूत्र से किया तो शाकटायन ने "ढ्रलुच्यण:[4]" यह सूत्र स्वीकृत किया है | लाघव और अर्थ की दृष्टि से दोनों में महान भेद है | शाकटायन व्याकरण में जो भी प्रत्याहार हैं, सभी का ग्रहण पाणिनि व्याकरण में भी किया गया है | अतएव दोनों आचार्यों के बीच जो भि मतभिन्नता है, वह वर्णसमाम्नाय में पठित सूत्रों के अनुबंध तथा सूत्र संख्या में ही है |

वेदों के षडंगभूत व्याकरणशास्त्र ही शब्दानुशासन नाम से विख्यात है, जैसा की महाभाष्य में भी भगवान पतंजलि ने उल्लेख किया है कि "पाणिनीय महत्सुविहितम्" [5] तथा "सर्ववेद पारिषद् इदं शास्त्रं" [6] अर्थात् पाणिनि का व्याकरण न केवल प्रतिष्ठा प्राप्त था वरन व्यवहृत भी था| वस्तुत: लौकिक और वैदिक शब्दों के निर्वचन की जितनी सुन्दर प्रक्रिया इसमें है, वैसी अन्य व्याकरणों में दुर्लभ है | बहुत से सूत्र प्रत्याहारपरक होने के साथ अनेक पदों की सिद्धि भी प्रत्याहारात्मक है | भाष्यकार अक्षरसमाम्नाय के विषय में प्रश्न उपस्थापित करते हुए कहते हैं कि वर्णों का उपदेश किसलिए किया जाए ? प्रश्न समाधान करते हुए कहते हैं कि "वृत्तिसमवायार्थ उपदेश:"[7] यह वृत्ति समवाय, अनुबंधकरण हेतु, इष्टबुद्धि के अर्थ हेतु उपदेश किया गया | अब प्रश्न यह है कि प्रत्याहार पद का अर्थ क्या है ? यद्यपि महर्षि पाणिनि रचित अष्टाध्यायी में प्रत्याहार की परिभाषा नहीं मिलती है परन्तु उसकी सिद्धि हेतु उन्होंने "आदिरन्त्येन सहेत" [8] इस सूत्र का निर्माण किया |

आचार्य कात्यायन ने तो अक्षर समाम्नाय पर विचार करते समय प्रत्याहार पद का स्पष्ट उल्लेख किया है:

प्रत्याहारे अनुबन्धानाम् काचिदाज्ग्रहणेषु न |
आचारात् अप्रधानत्वात् लोपश्च बलवत्तर: ||[9]

'प्रत्याह्रियन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णा यत्र' [10] इस विग्रह के अनुसार आङ् उपसर्गपूर्वक ह्र धातु से घञ् प्रत्यय से यह शब्द निष्पन्न होता है | जैसे अच् इस प्रत्याहार से अ इ उ ण ऋ लृ ए ओ ऐ औ इन वर्णों का बोध होता है | इसलिए एक प्रकार से प्रत्याहार शब्द योगरूढ़ हो गया है | जैसे पंकज शब्द की व्युत्पत्ति के आधार पे शैवाल पद के बोध की संभावना होने पर भी नीरज की प्रतीति ही होती है उसी तरह प्रत्याहार पद से अच्,हल् आदि वर्णों का अभिज्ञान भी हो जाता है अन्यों का नहीं यद्यपि सवर्णोद्दातादि भेद से अठारह वर्णों का बोध भी प्रत्याहार पद से हो जाना चाहिए था परन्तु होता नहीं | इसी प्रकार योग दर्शन में भी प्रत्याहारों का वर्णन 'चित्तवृत्तिनिरोध:'[11] के रूप में हुआ है | यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धरना ध्यान एवं समाधि इन अष्टांगों के नियमन से इसे प्रत्याहार संज्ञा से अभिहित किया गया है |

पाणिनीय प्रत्याहारों का वर्गीकरण और संख्या

यह विदित है कि वर्णसमाम्नाय चौदह सूत्रों में बद्ध है और उसका कारण है चौदह अनुबंध और मुख्य प्रयोजन है प्रत्याहार | महर्षि पाणिनि के अनुसार इकतालीस प्रत्याहार हैं जिसका हरिदीक्षित ने अपनीप्रौढ़ मनोरमा की टीका 'शब्दरत्न' [12] में उल्लेख किया है:

अनुबंध	प्रत्याहार	संख्या
ङ्, **ञ्**, ण्, व्, ट्,	एङ्, यञ्, अण्, छव्, अट्	5
मूर्धन्य षकार	झष्, भष्	2
क् ण् म्	अक् इक् उक् अण् इण् उण् अम् यम् डम्	9
चकार	अच्, इच्, एच्, ऐच्	4
यकार	यय्, मय्, झय्, रय्	4
रेफ	यर्, झर्, चर्, शर्	5
शकार	अश्, हश्, वश्, झश्, जश्, बश्	6
लकार	अल्, हल् वल् रल् शल् **झल्**	6

पाणिनि व्याकरण में कुछ विशिष्ट प्रत्याहारों का प्रयोग निम्न सूत्रों में देखा जा सकता है:

प्रत्याहार	सूत्र [13]
अण्	उपरण रपरः, ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्गोऽणः, केऽणः, अणोऽप्रगृह्यस्याऽनुनासिक
अक्	अकः सवर्णे दीर्घः, ऋत्यकः, नाग्लोपिशास्वृदिताम्, सन्वल्लघुनि चङपरे ऽनग्लोपे
इक्	इको गुण वृद्धी, इग्यणः सम्प्रसारणम्, एच् इग्घ्रस्वादेशे, इको झल्, शलइगुपधा निटः क्सः, इकः काशे
उक्	उगितश्च उगितश्च उगिदचां सर्वनामस्थाने धातोः श्रुयुकः किति
एङ्	अदेङ गुणः, एङ प्रचाम् देशे, एङ ह्रस्वात समुद्धे, एङि पररूपम्
अच्	अचः परस्मिन् पूर्वविधौ
इच्	इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः, नादिचि, इच एकाचोऽम् प्रत्ययवच्च, हलश्चेणुपपात्,इजादेः सनुमः
एच्	कृन्मेजन्तः, एच् इग्ज्स्वादेशे, आदेच उपदेशोऽशिति, एचोऽयवायावः, वृद्धिरेचि

इस प्रकार संक्षेप में हम पाते हैं कि पाणिनि निर्मित प्रत्याहारों ने व्याकरण के लाघव को न केवल सरलता प्रदान की अपितु अपने उद्देश्य की सार्थकता को भली भांति सिद्ध किया है |

संदर्भ ग्रन्थ :

1. **पाणिनि अष्टाध्यायी**
2. **शाकटायन व्याकरण**
3. **पाणिनि अष्टाध्यायी**
4. **शाकटायन व्याकरण**
5. **महाभाष्य**
6. **महाभाष्य**
7. **महाभाष्य**
8. **पाणिनि अष्टाध्यायी**
9. **कातन्त्र व्याकरण**
10. **सिद्धांत कौमुदी**
11. **पतंजलि योगसूत्र**
12. **हरि दीक्षित कृत शब्दरत्न**
13. **पाणिनि अष्टाध्यायी**